काशीवास का फल

असारे खलु संसारे सारमेतच्चतुष्टयम् ।
काश्यांवासः सतां संगः गंगाम्भः शिवपूजनम् ॥
(काशीखण्डे)

अर्थ - इस असार संसार में चार सार वस्तु हैं - (१) काशी में निवास (२) संतो का संग, (३) गंगाजी में स्नान और (४) शिवजी की पूजा ।

यत्सुखं काशीवासेऽत्र न तदब्रह्माण्डपे ।
अस्ति चेत्सकलं सर्वं काशीवासाभिलाषुकाः ॥
(काशीखण्ड, अ० ३, श्लो० ८२)

अर्थ - जो सुख काशीवास से प्राप्त होता है, वह सुख इस सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में दुर्लभ है। यदि ऐसा सुख अन्यत्र सुलभ होता तो सभी लोग काशीवास के अभिलाषी क्यों होते ।

वस्तुकोटिगुणं पुण्यं पुण्यं काश्यांवासयितुर्ध्रुवम् ।
आत्मानं तारयेत् स तु स्तौ द्वौ वासयिता यतः ॥
काशी दर्शन . . . .)

अर्थ - काशीवास करने वाले से काशीवास करानेवाले को कोटिगुणा पुण्य अधिक होता है, क्योंकि काशीवास करनेवाला तो अपने को ही तारता है किन्तु पर काशीवास करानेवाला अपने को तथा जिसे वास कराता है उसे भी दोनों का उद्धार कर देता है ।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी की महिमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

यथा शुक्तौ पयोवाहात् पतितं जल किन्दव: ।
मुक्ता: स्युस्तद्वा काश्यां स्थिता: सर्वेऽपि जन्तव: ॥
(शिव पुराण)

अर्थ :— जिस प्रकार शुक्ति में आकाश से जल गिरने पर मोती बन जाता है, उसी प्रकार काशीवास करने वाले सभी जीव प्राणी मुक्त (शिवरूप) हो जाते हैं।

काशीवासं जनो देवि! मम गर्भे वसेत्सदा ।
अतस्तं मोचयाम्यन्ते प्रतिज्ञेयं यतो मम ॥
(काशी खण्ड, अ०-३१, श्लो०-१३१)

अर्थ → भगवान विश्वनाथ जी भवानी जी से कहते हैं कि हे देवि! काशीवासी सदा मेरे गर्भ में निवास करते हैं। अत: अन्त में मैं उन्हें मुक्त कर देता हूँ। यही हमारी प्रतिज्ञा है।

काशीं समाश्रिता यैश्च यैश्च विश्वेश्वरोऽर्चित: ।
तारकं ज्ञानमासाद्य ते मुक्ता: कर्मपाशत: ॥
(काशीखण्ड, अ०-४२ श्लो०-५६)

अर्थ → जो यथाविधि काशीवास करते हैं, और विश्वनाथ भूत-भावन का दर्शन-अर्चन-पूजनादि करते हैं, वे तारक ज्ञान प्राप्त करके कर्मबन्धन से मुक्त हो जाते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशीकी महिमा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरे तीर्थ यात्री विश्व
से काशी आता है ~~एक~~ काशी
~~में~~ के दर्शन करके दर्शन करके
आनन्दित होते हैं ~~काशी~~ ही
काशी के दर्शन
स्थल को दर्शन कर आश्चर्य
और चकित होजाते है ~~काशी~~ चकित
काशी के दर्शन करते ही जन्म
जन्मान्तर के पापों दग्ध जला होते है
और काशी के दर्शन होते ही
मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार
आदि संशुद्ध होजाते है। मन
स्थिर होजाता है यात्री काशी आते ही
आनन्द से मग्न होजाता है,
और जन्म जन्मान्तर के पुण्य से
काशी को उत्तर वाहिनी गङ्गा में
स्नान तथा ~~गाय~~ गाय में बैठ कर
के दर्शन करते मिलते

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

बारी पृथ्वी से अलग उठा
तिनोलोको से बारी है बारी
में मरे हुए व्यक्ति को
स्नान खाना आदि सुगन्धित
फूलों से सजाते है। उनके
(नाचते हुए
प्रकार के बाजा बजाते हुए बाजा
बजाते
वाले आगे-आगे चलते है। चार
पालकी मृत सैया पर सोया हुआ
सब को कन्धे पर ढोए है।
फूल और वस्त्र आदि से सजा
कर मृतक के उपर फूल, पैसा
का
एवं धान के लावा वर्षा करते है
विशाल जुलूस चलते है जैसे
बर कन्यारों परातीनिकरे जा
बारी
जाते हुए पहुंचनी से
कन्या से विवाह करने जाते हो

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

परात लेकर मिलने जाती है
उसी प्रकार काशी में मृतक
व्यक्ति परात लेकर काशी विश्व
नाथ जी से मिलने जाता है।
मृतक के घर वाले "हर हर
महादेव" ही कहते हैं। और
साधू महात्मा एवं संन्यासी
सो पहाड़ियों के ऊपर उसी
प्रकार कुछ-दाना के पर्ची करते
हुए साधुओं के घर वाले हर हर
महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ
के गढ़े कीर्तन करते हुए
चलते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

जो व्यवस्था करते है।
2 दूसरे तीर्थ यात्रियों की पूर्ण
करते है। निर्धन तीर्थयात्रियों
यात्रा करते हैं और काशी में आते है
गंगा स्नान, संध्या - तर्पण, पिंड
दान करके ब्राह्मणों को जीमाते
करवाते है और दक्षा शक्ति दक्षिणा
देते है साथ माहात्माओं को जल
पान कराते है। तीसरे दिन गंगा
स्नान करके मठ-मन्दिर और
काशी के दर्शनीय स्थलों के दर्शन
करने जाते है जाते है सारे
दिन, पंचक्रोशी अन्तर्गृही
(काशी की)
आदि यात्रा करते जाते हैं (फिर
काशी आदि यात्रा करते हैं

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तीसरे तीर्थ यात्री विश्व से काशी आते है वह काशी में के दर्शन करके दर्शन करके आनन्दित होते है काशी के अन्नी, ऐश्वर्य को दर्शन कर आश्चर्य और चकित होजाते है काशी पहुंच, काशी के दर्शन करते ही जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट नष्ट होते है और काशी के दर्शन होते ही मन, बुद्धि, चित्त एवं अहंकार आदि सब शान्त होजाते है मन स्थिर होजाता है यात्री काशी आते ही आनन्द से मग्न होजाता है, और जन्म जन्मान्तर के पुण्य से काशी की उत्तर वाहिनी गङ्गा में स्नान तथा ध्यान में बैठ कर कार

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के गङ्गा तट के
मणिकर्णिका घाट, मन्दिर और
विशाल मकान तथा
स्नान करने वाले पण्डों, धर्म-
शाला आदि का दर्शन करने के लिए
प्रातः ५-०० बजे से ११ बजे
तक स्नान करने वालों की दर्शन
होती है ऐसा आपने गङ्गा जी
से असी नदी, गङ्गा संगम से
वरणा गङ्गा-संगम तक जो
काशी की दर्शन होती है वह
दृश्य फिल्म में कई जगह नहीं
दिखने मिलता है, इन्होंने
यह काशी की दर्शन दिखा उस
CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

काशी के गङ्गा तट के
तीर्थ, घाट, मन्दिर और
विशाल मकान तथा
स्नान करने वालों की
गंगा को दर्शन करने के लिए
प्रातः ५-४५ बजे से ११ बजे
तक स्नान करने वालों की दर्शन
होती है ऐसा आधे गङ्गा जी
से असी नदी गङ्गा संगम से
परणा गङ्गा संगम तक जो
काशी को दर्शन होती है वह
दृश्य चित्त में कई भी नहीं
दिखने मिलता है। जिन्होंने
यह काशी को दृश्य देखा और दर्शन किया उन

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

कथावाची को जीवन पर्यन्त
काशी की याद दिलाता रहता है
पर मनुष्य काशी को भूल
नहीं सकता (काशी को छोड़ना नहीं चाहता)
कहीं सकता पर दूसरे जन्म में
काशी में पुनः आकर (विश्व
के सारा काशी में पढ़ाया जाता
है) पढ़कर विश्वज्ञान होकर
ज्ञान प्राप्त करेंगे + करता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

३ व्याधियों को जिन पढ़ना काशी की याद दिला रहता है पर अन्यत्र काशी को भूल नहीं सकता पर दूसरे जन्म में काशी में पुनः आकर (विद्या के आस काशी में पढ़ाया जाता है) पढ़कर विद्वान होकर ज्ञान प्राप्त करेंगे करता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri